SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-02, Issue-02, December- 2024
www.shikshasamvad.com

"गंगाघाटी में बौद्ध धर्म की उत्पत्ति के सन्दर्भ में भौतिक वातावरण की भूमिका"

ब्रजेश कुमार तेजस्बी
शोधार्थी
प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति विभाग
एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय
बरेली।

प्रो0 विजय बहादुर सिंह यादव
शोध पर्यवेक्षक
प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति विभाग
एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय
बरेली।

सारांश

छठी शताब्दी ईसा0 पूर्व के उत्तरार्द्ध में मध्य गंगाघाटी के मैदानों में अनेक धार्मिक संप्रदायों का उदय हुआ। इस कालखण्ड में उद्घटित हुए लगभग 62 धार्मिक संप्रदायों की जानकारी मिलती है। इनमें से अनेक संप्रदाय पूर्वोत्तर भारत में रहने वाले विभिन्न समुदायों में प्रचलित धार्मिक प्रथाओं एवं अनुष्ठान–विधियों पर आधारित थे। इनमें सबसे प्रमुख बौद्ध संप्रदाय था। बौद्ध सम्प्रदाय का उत्थान शक्तिशाली धार्मिक सुधार आन्दोलन के रूप में हुआ था। बौद्ध धर्म भारत की श्रमण संस्कृति से निकला धर्म एवं दर्शन है। बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध थे जिनका समय 563 से ई0 पूर्व 463 ईसा पूर्व तक माना जाता है। यह काल परिवर्तन एवं बौद्धिक उन्नति के लिए जाना जाता है। बौद्ध धर्म की उत्पत्ति के अनेक कारण माने जाते हैं परन्तु हमारे मन में बौद्ध धार्मिक आन्दोलन को समझने की कुंजी लोगों के भौतिक जीवन में हुई महत्वपूर्ण प्रगति में निहित है।

डॉ0 पी0वी0 काणे ने बौद्ध धर्म की उत्पत्ति को लेकर अपनी कृति ''धर्म शास्त्र का इतिहास'' में विचार प्रकट किये हैं। वे कहते हैं कि ''बुद्ध ने न तो अनुभूत किया और न ही यह दावा कि वे नये धर्म का प्रवर्तन कर रहे हैं एवं न ही उन्होंने हिन्दू धर्म और इसकी सभी प्रथाओं तथा आस्थाओं का परित्याग किया'' बुद्ध के उपदेशों में उनके समय के हिन्दुओं में प्रचलित कई आस्थाएं शामिल थीं, जैसे कर्म, पुर्नजन्म एवं ब्राह्मण ग्रन्थों के उपदेशों का बड़ा भाग आदि। परन्तु यज्ञ और बलि पर आधारित प्राचीन वैदिक धर्म अपने प्रभाव को धीरे–धीरे खोता जा रहा था। जन

साधारण न तो उसे समझ सकता था, न उसमें रूचि ले पाता था और न ही उसमें होने वाले आर्थिक व्यय का भार उठा पाना उसके लिए सम्भव था। ब्राह्मणों की श्रेष्ठता एवं शूद्रों की दीन–हीन स्थिति पर आधारित सामाजिक और धार्मिक व्यवस्था भी आम जनमानस के लिए क्षोभ एवं अक्रोश का कारण बन गई तथा धार्मिक और सामाजिक श्रेष्ठता पर आधारित व्यवस्था को क्षत्रियों के द्वारा चुनौती दी गई क्योंकि क्षत्रीय ही शस्त्र धारण करने के अधिकारी थे एवं राज्य में शान्ति व्यवस्था, कृषि तथा व्यापार की रक्षा में भी संलग्न थे। कृषि और व्यापार की उन्नति ने उनके महत्व को समाज में स्पष्ट किया था। इस प्रकार, तत्कालीन धार्मिक और सामाजिक स्थिति के प्रति असन्तोष, जीवन के दुःखों और उनके कारणों का गम्भीरता से मनन और इन दुःखों से मुक्ति प्राप्त करने वाले मार्ग एवं सत्य की खोज की तीव्र लालसा उस युग की एक विशेषता बन गई।

मानसिक चिन्तन के आधार पर विचारों की स्वतंत्रता एवं सत्य की खोज के प्रति आकर्षण उपनिषदों के समय से ही आरम्भ हो गया था। उपनिषदों के समय ही ज्ञान मार्ग का प्रतिपादन हुआ था। आत्मा है नहीं है, यदि है तो इसकी प्रकृति कैसी है। मनुष्य की मृत्यु के पश्चात उसके लिए क्या है, मनुष्य के लिए सर्वोत्म स्थिति क्या है, आदि अनेक प्रकार प्रश्न उपनिषदों द्वारा उठाये गये एवं उनके उत्तर दिये गये। उपनिषदों ने मोक्ष की प्राप्ति अथवा जीवन मरण की प्रक्रिया से मुक्ति पाकर ब्रह्मा या ईश्वर में लीन हो जाना मनुष्य के लिए श्रेष्ठ स्थिति बताया है। जिसे प्राप्त करना ज्ञान के द्वारा ही सम्भव है। उननिषदों में कहा गया है मनुष्य सत्कर्म, बलि, यज्ञ आदि के द्वारा भविष्य में श्रेष्ठ जीवन तो प्राप्त कर सकता परन्तु मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता है। इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से वैदिक धर्म की प्रमुख विशेषता यज्ञ और उसमें दी जाने वाली मनुष्य एवं पशुवलि पर प्रथम आक्रमण उपनिषदों के माध्यम आरम्भ किया गया था। इस प्रकार उपनिषदों ने वैदिक धर्म की मूल मान्यताओं को ही नकार दिया था और धर्म में विभिन्न चिन्तनों के लिए मार्ग प्रशस्त किया था।

परिवर्तित आर्थिक परिस्थितियों ने विभिन्न धार्मिक आन्दोलनों की उत्पत्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। लगभग 700 ई0पूर्व में पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं बिहार के लोगों के भौतिक जीवन में क्रान्ति का मुख्य कारण लोहे के प्रयोग का आरम्भ था। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के एटा जिले में अतंरजीखेड़ा की एक कार्बन–14 तिथि लोहे के आरम्भ को लगभग 1000 ई0 पूर्व में प्रदर्शित करती है। गंधार क्षेत्र में लोहे के उपकरणों का प्रयोग लगभग 900 ई0पूर्व एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश में लगभग 800 ई0 पूर्व माना जाता है। तत्पश्चात धीरे–धीरे उत्तर प्रदेश के समस्त भू–भाग में इसका विस्तार हुआ होगा। राजघाट से प्राप्त लौह मल यह इंगित करता है कि लगभग 700 ई0 पूर्व में यहाँ उपकरण निर्माण के लिए लौह अयस्क लाया गया होगा।

वाराणसी जिले के प्रहलादपुर में लगभग 500 ई0पू0 लोहे के आरम्भ का संकेत मिला है। बिहार के सारण जिले में सातवीं एवं छठी शताब्दी ई0 पूर्व के मध्य चिरांद नामक, स्थल से लोहे के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। वैशाली से

भी अनेक लौह उपकरण छठी शताब्दी ई0पूर्व के अयस्क मिले हैं। गया जिले के सोनपुर स्थल से काले व लाल मृदभाण्ड के साथ लौह अपस्क के पिंड एवं लौह मल प्राप्त हुआ है। उपरोक्त सभी स्थलों से प्राप्त साक्ष्य यह संकेत करते हैं कि छठी से पांचवीं शताब्दी ई0 पूर्व में लौह धातु अभियांत्रिकी में पर्याप्य उन्नति हो रही थी।

लगभग 1000 ई0 पूर्व के आस–पास मनुष्य को लोहे का ज्ञान हो चुका था। और लोहे का प्रयोग मनुष्य अस्त्र–शस्त्र के साथ–साथ कृषि उपकरण बनाने के लिए भी करने लगा था। शतपथ– ब्राह्मण में अग्नि द्वारा जंगल को जलाकर आर्यो द्वारा उत्तर पूर्व की ओर बढ़ने का वर्णन मिलता हैं। निशचित रूप से यह प्रक्रिया जंगलों को जलाकर भूमि को कृषि योग्य बनाने की थी। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हल द्वारा कृषि लोहे के फाल की सहायता से सम्भवतः 600 ई0पूर्व शुरू हो चुकी थी। चित्रित धूसर मृदभाण्ड परम्परा के अन्तिम काल (संभवतः प्रथम सहस्राब्दी ई0 पूर्व के मध्य) का लोहे का फाल एटा जिले के जखेड़ा नामक स्थल से प्राप्त हुआ है। उसी प्रकार लोहे का एक अन्य काल कौशम्बी मे हुए उत्खनन से प्राप्त हुआ है। लोहे के उपकरणों का प्रयोग करने वाले इन नवीन कृषकों ने आगे बढ़ने के साथ–साथ लगभग 600–300 ई0 पूर्व के मध्य अपने ज्ञान का विस्तार पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं बिहार में भी किया। मगध (पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं बिहार) तक पहुँचने से आर्यो को बहुत बड़ी मात्रा में उच्च कोटि के बहुउपयोगी लोहे के कृषि उपकरण तथा कृषि उपयोगी भूमि प्राप्त हो गई थी। ''विनय पिटक'' नामक बौद्ध ग्रन्थ हल के फाल के विषय में चर्चा करता है कि जिस प्रकार संपूर्ण दिन गर्म करने के बाद हल के फाल को जब पानी में डाला जाता है तो वह कड़कड़ाता है और सिसकारता है तथा भाप और धुआं छोड़ता है, उसी प्रकार यह शक्कर जब पानी में डाली जाती है तो कड़कड़ाती एवं सिसकारती है तथा भाप एवं धुंआं छोड़ती है। लोहे की कुल्हाड़ी, फाल, दरांती एवं अन्य उपकरणों का प्रयोग जंगल साफ करने तथा बड़े पैमाने पर बस्तियों को बसाने के कारण बन गये थे एवं इनके द्वारा नवीन कृषि तकनीकों का जन्म हुआ। नवीन कृषि उपकरणों एवं तकनीकों के विकसित हो जाने से कृषि उत्पादन में आपार वृद्धि हुई, उससे व्यापार की भी उन्नति हुई क्योंकि किसान के पास अपनी आवश्यकता से अधिक उपज का हिस्सा बाकी रह जाता था उसका उपयोग उसने विनमय और व्यापार के लिए किया। व्यापार में उन्नति होने से बड़े नगरों का निर्माण सम्भव हुआ। पाली–ग्रन्थों में उस समय गंगाघाटी में विकसित अनेक नगरों का उल्लेख मिलता है। इनमें चम्पा, वैशाली, वाराणसी, राजग्रह, कौशाम्बी, कुशीनगर, श्रावस्ती एवं पाटलिपुत्र जैसे बड़े नगर सम्मिलित थे।

उत्तर वैदिक काल के बाद के समय में वर्ण–व्यवस्था अत्यन्त कठोर हो गई और वर्ण का आधार कर्म के स्थान पर जन्म माना जाने लगा। इस स्थिति में ब्राह्मणों तथा क्षत्रियों ने समाज में श्रेष्ठ स्थित प्राप्त कर ली थी तथा आपस में समझौता भी कर लिया पुरोहित का कार्य एवं शिक्षा पर ब्राह्मणों का नियंत्रण स्वीकार कर लिया गया और शासन का कार्य क्षत्रियों का मान लिया गया। परन्तु कालान्तर में यह स्थिति भी स्वीकार्य नहीं रही। कृषि एवं उद्योगों की प्रगति से वैश्यों एवं शूद्रो ने जिनकी स्थिति पहले से समाज में निम्न स्तर की थी का विरोध

किया, मुख्य रूप से वैश्यों ने जिनके पास अब अधिक सम्पति हो गई थी। वैश्यों ने समाज में उच्च स्तर प्राप्त करने के लिए क्षत्रियों का समर्थन किया जो उन्हें कृषि व्यापार आदि में सुरक्षा प्रदान कर सकता था। क्षत्रियों ने भी अब वैश्यों का साथ दिया और ब्राह्मणवाद और पुरोहित वर्ग की सर्वोच्चता का विरोध किया यज्ञो एवं बलि प्रथा की बृद्धि का मुख्य कारण ब्राह्मण पुरोहिता वर्ग का अत्याधिक धन की प्राप्ति का लालच था।

यज्ञ एक धार्मिक अनुष्ठान था जिसमें ब्राह्मण पुरोहित दान के रूप में धन, पशु, भोजन आदि प्राप्त करता था। ब्राह्मणों का आचरण अत्यधिक गिर गया था। प्रतिक्रिया स्वरूप अब क्षत्रियों एवं वैश्यों को एक ऐसे धर्म की आवश्यकता थी, जिससे उनकी स्थिति में सुधार हो सके इसलिए उन्होंने महावीर और गौतम बुद्ध दोनों का समर्थन किया। गौतम बुद्ध एवं महावीर स्वामी स्वंय क्षत्रिय वर्ण के थे। गौतम बुद्ध ने वैदिक कर्मकाण्ड तथा वेद दोनों का खण्डन किया। वर्ण व्यवस्था को कोई महत्व नहीं दिया, अंहिसा का समर्थन किया जिससे राज्यों के बीच युद्धों का अन्त हुआ जिससे व्यापार वाणिज्य में अपार बृद्धि हुई।

निष्कर्ष –

बौद्ध धर्म के मुख्य उद्देश्य जो भी रहे हों परन्तु आम–जनमानस ने बुद्ध के विचारों का समर्थन नये धर्म के रूप में किया और इसकी ओर निश्चय ही आकर्षित हुए। बौद्ध धर्म के प्रति आकर्षण का मुख्य कारण यह था कि लोहे के उपयोग तथा हल द्वारा खेती एवं सिक्को के उपयोग द्वारा उत्पन्न सामाजिक एवं आर्थिक विकास, तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश व बिहार मे विकसित नगरों द्वारा जो चुनौतियां सामने आई थी, उनका उत्तर बौद्ध धर्म के पास था। बौद्ध धर्म की उत्पत्ति में विभिन्न कारण उत्तरदायी थे जिनमें भौतिक व सैद्धान्तिक कारण प्रमुख माने जाते हैं। इनमें भौतिक कारणों में सबसे प्रमुख कारण लोहे के उपकरणों का प्रयोग था। लौह तकनीक के विकास तथा उसके उपयोग के फलस्वरूप समाज में गुणात्मक परिवर्तन आया जिसने गंगाघाटी में द्वितीय नगरीकरण के मार्ग को प्रसस्त किया। बौद्ध धर्म के उद्भव को गंगाघाटी में लौह उपकरणों के प्रयोग के परिणाम के रूप में देखा जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. शर्मा, रामशरण (2018) प्राचीन भारत में भौतिक प्रगति एवं सामाजिक संरचनाएं राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. द बुक ऑफ डिसिप्लिन (विनय पिटक), IV (महावग्ग), अनु0 आई0 बी0 हार्नर, सेक्रेड बुक्स ऑफ द बुद्धिस्ट्स, जिल्द 14, लंदन, (1951)
3. शर्मा, जी0 आर0 (1980), हिस्ट्री–टु–प्री–हिस्ट्री, इलाहाबाद
4. पण्डेय, जी0सी0, ''स्टडीज इन द ऑरिजन ऑफ बुद्धिज्म''।
5. मिश्रा, जी0 एस0 पी0, द एज ऑफ विनय पिटक।

6. शर्मा, रामशरण (2011) ''प्रारम्भिक भारत का अर्थिक और सामाजिक इतिहास'', हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
7. शर्मा0 एल0 पी0 (2001) ''प्राचीन भारत'' प्रकाशक लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा।
8. शर्मा, रामशरण (2021) भारत का प्राचीन इतिहास'', आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा भारत में प्रकाशित, नई दिल्ली।
9. धुर्ये, जी0 एस0, ''कास्ट एण्ड क्लास इन इण्डिया''।
10. शर्मा0 आर0 एस0, ''पर्सपेक्टिव इन सोशिएल एण्ड इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑन, अर्ली इण्डिया''
11. गोखले, बी0जी0 अर्ली बुद्धिज्म एण्ड द अरबन रिवोल्यूशन''
12. अंगुत्तर निकाय, 11, 45–46
13. अंगत्तर विकास, 111, 37–38

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-02, Issue-02, Dec.- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Dec-2024/12

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

ब्रजेश कुमार तेजस्बी और प्रो0 विजय बहादुर सिंह यादव

For publication of research paper title

"गंगाघाटी में बौद्ध धर्म की उत्पत्ति के सन्दर्भ में भौतिक वातावरण की भूमिका"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-02, Month December, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com